इस प्रकार ...

1. <u>राष्ट्रीय महत्व</u> — भारतीय विद्वानों के अनुसार संस्कृत सभी आर्य भाषाओं की जननी है। अन्य भाषाएँ संस्कृत भाषा की ऋणी हैं। संस्कृत जो कि हमारी राष्ट्रीय भाषा है, विघटनकारी तत्वों को इस एकता की याद दिलाती है। भाषा में विघटनकारी विष को ~~बाँध~~ धोने की क्षमता है। भाषा एक सूत्र में बाँध देती है, भारतीयों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाती है। भाषा के योगदान से व्यक्ति भेदभाव भुलाकर राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च स्थान देने लगते हैं। संस्कृत अन्य सभी भाषाओं की जननी है। यह भाव भाषा को लेकर झगड़ने वाले लोगों को शान्त कर देता है, लोग सहयोग की बात सोचने लगते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से सत्य है कि भाषा भारत में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करती है। भारत में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा मानने में भी दक्षिण भाग में मतभेद है, परन्तु ~~सह~~ राज्यों के आधार पर पैदा होने वाले मतभेद भाषा और के राष्ट्रीय महत्व को समझने पर समाप्त हो जाते हैं।

2. सांस्कृतिक महत्व ...

...ीय महत्व को समझने पर समाप्त हो जाते है।

2. <u>सांस्कृतिक महत्व</u> — भाषा मूलतः मनुष्य का एक संस्कार है। भाषा को हम पारिवारिक एवं सामाजिक पर्यावरण से सहज रूप से क्षमता अनुसार क्रिया द्वारा अर्जित करते है। परम्परा उसे पुष्ट तथा विकसित करती है और संस्कृति की सजगता से भाषा मुखर हो उठती है। संस्कृति हमारी व्यापार का आदान-प्रदान भी है तथा संस्कृति की रक्षक भी। यही कारण है कि प्रत्येक स्वाभिमानी स्वतन्त्र एवं समुन्नत राष्ट्र की स्वयं की राष्ट्रभाषा अवश्य होती है, जो उसकी राष्ट्रीय संस्कृति की पहचान होती है तथा इसी से राष्ट्र की धारा ~~विक~~ विकासशील होती है।

ते

ती

Scanned by TapScanner

3. साहित्यिक महत्व :— भावों को बोलकर ही अभिव्यक्त किया जाता है। भाषा ही मानव को समाज में प्रतिष्ठित करती है और भाषा ही हमें इस योग्य बनाती है कि हम अपने जीवन के सुख - दुख, हर्ष - विमर्ष, भय, क्रोध आदि भावों को दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकते हैं। भाषा केवल हमारे विचारों की ही संवाहिका नहीं है, वह हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला - कौशल की परिचायिका भी है। अनेक विषयों पर लिखित पुस्तकों का प्रकाशन भाषा के द्वारा ही सम्भव है। हमारी अभिव्यक्ति ओज, माधुर्य और प्रसादिकता से समन्वित होनी चाहिये।

Scanned by TapScanner

4. व्यावहारिक महत्व :— भाषा मूलतः सामाजिक वस्तु है। भाषा का उपयोग प्रायः तीन स्तरों पर किया जा सकता है — व्यक्ति स्वयं के लिए भाषा का उपयोग कर सकता है अथवा व्यक्ति और व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे के उपयोग हेतु भाषा का प्रयोग कर सकता है और सामाजिक सन्दर्भ से जुड़ने के लिए व्यक्ति एवं समाज के मध्य तो प्रायः भाषा का उपयोग होता ही है। वस्तुतः मनोरंजनार्थ या स्वागत भाषण हेतु भाषा का प्रयोग होता है। सामाजिक दृष्टि से भाषा के अनेक उपयोग माने जाते हैं। —

1) चिन्तन - ज्ञान-विज्ञान की जितनी शाखाएँ है, सभी का विकास चिन्तन के माध्यम से ही हुआ है। धर्म, दर्शन, अर्थ, राजनीति, कला, साहित्य एवं विज्ञान आदि ~~के ही~~ सभी चिन्तन के ही प्रतिफल है।

2) आस्वादन — साहित्य या संगीत का आस्वादन हम भाषा के माध्यम से ही करते हैं। सृजनात्मक या रचनात्मक क्षणों में रमणीय भाषा का उपयोग आवश्यक हो जाता है।

3. सूचना — सूचना देना या प्राप्त करना भाषा के बिना सम्भव नहीं है।

Scanned by TapScanner

4. <u>प्रेरणा</u> :— प्रेरणा को भाषा का गत्यात्मक उपयोग कहा जाता है। आज के विज्ञापन के युग में तो इसी दृष्टि से भाषा का अधिक उपयोग होने लगा है। वैसे साहित्य एवं संगीत के माध्यम से भी भाषा का उपयोग प्रेरणा के लिए होता रहा है।

Scanned by TapScanner